Bihar Public Service Commission

BPSC

Bihar Public Service Commission

डाउनलोड बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) 64वीं मुख्य परीक्षा प्रश्न पत्र

वैकल्पिक विषय - हिन्दी भाषा और साहित्य

Downloaded from: http://studymarathon.com/

ALL RIGHTS RESERVED
सर्वाधिकार सुरक्षित

06/FD/CC/M-2019-29

2019

हिन्दी भाषा और साहित्य

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 300

अनुदेश :

- उपान्त के अंक पूर्णांक के द्योतक हैं।
- प्रश्न-पत्र दो खण्डों में विभाजित है।
- प्रत्येक खण्ड से तीन-तीन प्रश्नों को चुनते हुए कुल छः प्रश्नों के उत्तर दें।
- परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों में ही उत्तर दें ।
- एक ही प्रश्न के विभिन्न भागों के उत्तर अनिवार्य रूप से एक साथ ही लिखे जाएँ तथा उनके बीच में अन्य प्रश्नों के उत्तर न लिखे जाएँ।

खण्ड—I

1. अवहट्ट से क्या अभिप्राय है? अवहट्ट की व्याकरणिक एवं शाब्दिक विशेषताएँ सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। 50

2. मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में अवधी के विकास पर विस्तार में प्रकाश डालते हुए अवधी में रचित प्रमुख प्रेममार्गी एवं रामभक्ति काव्य का उल्लेख कीजिए। 50

3. स्वाधीनता संघर्ष के काल-खण्ड में राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास एवं योगदान पर प्रकाश डालिए। 50

4. हिन्दी साहित्य के आदिकाल की प्रवृत्तियाँ स्पष्ट करते हुए सोदाहरण विचार कीजिए कि आदिकाल में समाज-सुधार एवं व्यक्ति-निर्माण के लिए भी काव्य-रचना हुई है। 50

Downloaded from: http://studymarathon.com/

5. भक्तिकाव्य की वे कौन-कौन सी प्रवृत्तियाँ हैं जिनके कारण भक्तिकाव्य का महत्त्व सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य में सर्वोपरि है, सोदाहरण विचार कीजिए। 50

6. छायावाद की उन विशेषताओं पर सोदाहरण प्रकाश डालिए जिनसे भारतीय संस्कृति के उदात्तस्वरूप का परिज्ञान होता है। 50

खण्ड—II

7. कबीर के समाज-दर्शन की विवेचना सोदाहरण करते हुए सिद्ध कीजिए कि कबीर का काव्य इक्कीसवीं सदी में भी प्रासंगिक एवं महत्त्वपूर्ण है। 50

8. क्या भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'अन्धेर नगरी' की रचना तद्युगीन शासन-व्यवस्था की अन्यायपूर्ण एवं मूर्खतापूर्ण नीति को उजागर करने के लिए की थी, सोदाहरण विचार कीजिए। 50

9. "'गोदान' में कृषक-जीवन की त्रासदी के साथ कृषक-जीवन में विद्यमान उन मूल्यों को भी उद्घाटित किया गया है जिनसे उस समाज की नैतिकता का परिज्ञान होता है, जो कृषकेतर समाज में नहीं हैं अथवा न्यून हैं।" इस कथन की समीक्षा 'गोदान' से उद्धरण देते हुए कीजिए। 50

10. "तुलसीदास 'कवितावली' के उत्तरकाण्ड में तद्युगीन परिवेश में व्याप्त विपन्नता, विवशता, अमानुषिकता एवं अनैतिकता को रेखांकित करते हुए भगवान् के प्रति सच्ची श्रद्धा रखने एवं नैतिकतापूर्ण जीवन-दृष्टि अपनाने की प्रेरणा देते हैं।" इस कथन का परीक्षण सोदाहरण कीजिए। 50

11. "'चन्द्रगुप्त' नाटक में भारतीय संस्कृति के उदात्तस्वरूप का सफल चित्रण हुआ है।" इस कथन का परीक्षण करते हुए नाटक से उद्धरण प्रस्तुत कीजिए। 50

Downloaded from: http://studymarathon.com/

12. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या रचनाकार की 'रचना-कुशलता' (भाषा-प्रयोग) को ध्यान में रखकर कीजिए : 25×2=50

(क) काहु न कोउ सुख दुख कर दाता। निज कृत करम भोग सबु भ्राता।।
जोग बियोग भोग भल मंदा। हित अनहित मध्यम भ्रम फंदा।।
जनमु मरनु जहँ लगि जग जालू। संपति बिपति करमु अरु कालू।।
धरनि धामु धनु पुर परिवारू। सरगु नरकु जहँ लगि ब्यवहारू।।
देखिअ सुनिअ गुनिअ मन माहीं। मोह मूल परमारथु नाहीं।।

दोहा—सपने होइ भिखारि नृपु रंकु नाकपति होइ।
जागे लाभु न हानि कछु तिमि प्रपंच जियँ जोइ।।

अस बिचारि नहिं कीजिअ रोसू। काहुहि बादि न देइअ दोसू।।

(ख) "यह है उपाय" कह उठे राम ज्यों मन्द्रित घन—
"कहती थीं माता मुझे सदा राजीवनयन!
दो नील कमल हैं शेष अभी, यह पुरश्चरण
पूरा करता हूँ देकर मातः एक नयन।"

★★★

Downloaded from: http://studymarathon.com/